

# इस्लाम की अपनी बेटियों से गुफ्तगु

इस किताब में हम पढ़ेंगे:

- दुस्तराने इस्लाम की इल्मी तड़प
- दुस्तराने इस्लाम का निसाबे जिंदगी
- "मारुफ" में शामिल काम
- औरत अच्छाई या बुराई के पैमाने में
- जन्नती महल
- दर्से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम
- बुलंद हौसला खातून
- उम्मुल मोमीनीन रदियल्लाहु अन्हा का अमले मुबारक
- खातूने जन्नत सरकारे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वक्ते वसाल
- एक सवाल एक तड़प
- अज़ीम बाप की अज़ीम बेटी के लफ़्ज़
- औरत और लिबास
- औलाद का पहला सबक
- अजीब हक़ महर:
- बीन की मुमानअत (मनाही)
- शादी की तक़रीबात और दुक्ख़तराने इस्लाम

तक़रीर: डॉ.मुहम्मद अशरफ आसिफ जलाली साहब

email: labbaikyarasoolallah\_indore@rediffmail.com

मदनी इल्लिजा: इस रिसाले में अगर किसी जगह ग़लती पाएं तो ब-ज़रिअए ईमेल मुत्तलअ फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन  
वस्सलातो वस्सलामो अला सय्यदिल अंबियाए वल मुरसलीन  
व अला आलेहि व अस्हाबेहि व अहले बैतेहि  
व औलियाए उम्मतेहि अजमईन

अम्मा बाअद  
फआऊजोबिल्लाहे मिनशैतानिर्रजीम बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَى أَنْ لَا يُشْرِكْنَ  
بِاللهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ  
بِبُهْتَانٍ يَفْتَرِيهِ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ  
فَبَايِعْنَهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ

कुरआन सूरह नंबर 60 (सूरह मुमतहाना)

सदकल्लाहुल अजीम व सदक रसूलोहुन्नबियुल करीमुल मतीन.

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ  
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا

अस्सलातो वस्सलामो अलैका या सय्यदी या रसूलल्लाह  
व अला आलिका व अस्हाबिका या सय्यदी या हबीब अल्लाह  
मौला या सल्लि वसल्लिम दाईमन अबदा अला हबीबिका  
खैरिल खल्कि कूल्लिहिमि

# इस्लाम की अपनी बेटियों से गुप्तगु

अल्लाह तबारक व तआला की हम्दो सना और हुजूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शफीअ ए मेहशर, मालिके कौसर, बेहबूबे दिलबर, अहमदे मुजतबा, जनाबे मुहम्मदे मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में दुरूदो सलाम अर्ज करने के बाद—

वारिसाने मिंबरो मेहराब, अरबाबे फिक्रो दानिश, अस्थाबे मुहब्बत व मवद्दत, हामीलीने अकीदा ए अहले सुन्नत, निहायत ही मोहतशिम व मोअज्जिज हज़रातो ख़वातीन! रब्बे जुलजलाल के फज़ल और तौफीक से आज हमारी गुप्तगु का मोजू (टॉपिक, सबक) है

“इस्लाम की अपनी बेटियों से गुप्तगु” मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला हम सब को कुरआने मजीद का फहम अता फरमाए और इस के इब्लागो तब्लीग और इस पे अमल की तौफीक अता फरमाए—अल्लाह तआला आज हमारी हाज़िरी को हमारे लाखों दुखों का मदावा बनाए और हमारे गुनाहों का कफ़ारा बनाए और हमारे जन्नत में जाने का सबब बनाए—

इस्लाम ने पहले दिन से ही मर्दों के साथ साथ औरतों की तालीम व तर्बियत पर खुसूसी तवज्जो दी है, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास ख़वातीने इस्लाम मुख्तलिफ़ मसाईल के इस्तिफ़सार के लिये पहुँचती और नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने अब्रे करम से उन की तिश्नगी (इल्म की प्यास) को बुझाते और उन के क़ल्ब व नज़र को सैराब फरमा देते थे—

## दुख़्तराने इस्लाम की तड़प:

हज़रते अबू सईद खुदरी रदियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि— एक सहाबिया रदियल्लाहु अन्हा नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आईं। उन्होने आकर कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका वसल्लम! मर्द हज़रात को यह सुनेहरा मोका मयस्सर है (मिलता है) कि आप की बातें सुनते हैं और उन को याद करते हैं, जबकि हमें इतना वक़्त नहीं मिलता, उन को ज़्यादा वक़्त मिल रहा है और वे आप के फरामीन को ज़्यादा याद कर रहे हैं, तो मैं औरतों की तरफ से नुमाईदा बन के आई हूँ, हमारा भी हक़ है और हमारा एक तकाज़ा है कि: “ एक दिन हमें अता फरमा दें, यानी सात दिनों में से एक दिन हमें दे दें, उस दिन हम आप के पास हाज़िर रहें, जो रब ने आप को सिखाया है, आप उस में से हमें भी इनायत फरमाएं।

उस ख़ातूने इस्लामी ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने अपनी एक इल्मी तड़प का इज़हार किया, जिस से पता चलता है कि उस वक़्त दुख़्तराने इस्लाम में किस कदर देने इस्लाम की तड़प थी। आज मगरिब—ज़दा औरतें जो हुकूक माँगती हैं कि मर्दों को ये मिला है तो हमें भी ये मिले, उस में वो बातें अजीबो ग़रीब होती हैं जिन का वो मगरिब—ज़दा औरतें तकाज़ा कर रही होती हैं। उन के लिये थियेटर (सिनेमा हाल) खुल गए हैं, हमारे लिये भी होना चाहिए। मगर उस वक़्त दुख़्तराने इस्लाम सरकारे मदीना सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार में मौजूद हैं और कहती हैं कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैका वसल्लम! मर्दों को ये वक़्त मिल रहा है कि उन की आँखों के कटोरे आप के हुस्न के समन्दर से लबरेज़ हैं

और मर्दों के कान आपके कीमती अल्फाज़ के फूलों को चुनने में मसरूफ रहते हैं और उनके कल्बो नज़र पर आप के चेहरे की तजल्ली पड़ती है और आप के अल्फाज़ याद कर के वह अपने सीनों को मुनव्वर करते हैं , तो एक दिन हमें भी अता फरमा दें कि जो सिर्फ हमारा दिन हो, उस दिन हमारी क्लास लगे, आप इर्शाद फरमाएं और हम सुनें, हम याद करें और हम आगे पहुँचाएं। ये ख़ातूने इस्लामी की तड़प थी , रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन की इस दरख्वास्त पे तवज्जो करते हुए फौरन फ़ैसला फरमा दिया कि: तुम फलां दिन और फलां जगह जमा हो जाओ, मुझे मेरे रब ने जो इल्म अता फरमाया है उस से तुम्हें भी हिस्सा अता फरमाऊँगा— रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें बकाईदा वक़्त दिया, बकाईदा उन्होंने (ख़्वातीने इस्लाम ने) अपना हिस्सा माँगा और फिर उन को सिखाया। सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पहले भी उन पे निगाहे इनायत फरमा रहे थे, अब बतौर ख़ास उन के लिये दिन मुकर्रर/मोईय्यन हो गया, वक़्त को मोईय्यन कर दिया गया कि ये दिन तुम्हारी क्लास का दिन है, इस में तुम को आना है, इस में तुम्हारे सामने अल्लाह तआला के दिये हुए इल्म से मैं बयान करूँगा, तुम उसे याद कर के अपनी नस्ल तक उस इल्म को पहुँचाना।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस सिलसिले के मुख्तलिफ़ खुतबात हैं, जो सेकड़ों हैं जिनमें दुख़तराने इस्लाम को बराहे—रास्त ख़िताब करते हुए उन को मुख्तलिफ़ अहकाम पर मुत्तलेअ (ख़बरदार) किया और उनकी इल्मी हैसियत की तामीर की। वि ख़्वातीन जो पहले आम सा इल्म रखती थी, उनमें से कोई मुफर्रिसरा बन गई, कोई मोहदिदसा बन गई और कोई फकीहा बन गई। ये अंदाज़ उन ख़्वातीने इस्लाम को अल्लाह तआला ने अता किया कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आमद से कब्ल जिन का नाम सिवाए जहालत व हिक्मत के कुछ न था, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन को मुक़ाम भी दिया और अपनी तरफ से उलूम का एक निसाब भी अता फरमाया—

### दुख़तराने इस्लाम का निसाबे ज़िंदगी:

इस सिलसिले में क़ुरआने मजीद की **सूरह नंबर 60 (सूरह मुमतहाना)** में एक ख़ास अहद का ज़िक्र है जो औरतों से लिया गया कि वह इस पर बैत कर लें और नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वादा करें कि सारी ज़िंदगी इस पर अमल करती रहेंगी और इस को अपनी ज़िंदगी का मुकम्मल निसाब बनाएंगी—

क़ुरआने मजीद में है कि—

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلَى أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِبُتْنٍ يُفْتَرِيهِ بَيْنَ أَيْدِيهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعَصِيَنَّ فِيْهِ مَعْرُوفٌ فَبَايِعْنَهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (١٢)

क़ुरआन सूरह नंबर 60 (सूरह मुमतहाना)

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ

(तर्जुमा: ऐ नबी जब तुम्हारे हुज़ूर मुसलमान औरतें हाज़िर हों)

يُبَايِعْنَكَ

(तर्जुमा: इस पर बैत करने को)

→ (तर्जुमा: वह अल्लाह का शरीक न ठहराएंगी)

→ (तर्जुमा: और न चोरी करेंगी)

→ (तर्जुमा: और न बदकारी)

→ (तर्जुमा: और न अपनी औलाद को कत्ल करेंगी)

मोमिनात ये अहद करें कि वो न शिर्क करेंगी, न चोरी करेंगी, न बदकारी करेंगी और न ही अपनी औलाद को कत्ल करेंगी।

و لَا يَأْتِيَنَّ بِبَيْتَانٍ يَفْتَرِيَهُ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَ أَرْجُلَيْهِ

(तर्जुमा: और न ये बोहतान लाएंगी जिसे अपने हाथों और पाँड़ों के दरमियान यानी मुजए विलादत में उठाए)

इस का मतलब ये है कि उस वक़्त कोई बाँझ औरत किसी का बच्चा उठा कर ले जाती और अपने खाविन्द (शोहर) से कहती कि ये मेरे यहाँ पैदा हुआ है (यानी जब शोहर सफर से लौट के आता तो वह किसी और के बच्चे को ये ज़ाहिर करवाती कि मेने इस को जन्म दिया है और ये तेरा बच्चा है। इस तरह की वारदातें होती थीं, तो अल्लाह तआला ने फरमाया कि उन औरतों से बैत कर लो कि ऐसा काम इस्लाम की कोई बेटी न करे।

و لَا يَعْصِيَنَّكَ فِي مَعْرُوفٍ

(तर्जुमा: और किसी नेक बात में तुम्हारी नाफरमानी न करेंगी)

इस में हर चीज़ दाखिल होगी कि जो भी अच्छाई का काम है ये औरतें जो शौक से कलिमा पढ़ रही हैं उन से कहो कि तुम मारुफ (अच्छे काम) में मेरी मुख़ालिफ़त नही करोगी।

**“मारुफ” में शामिल काम:**

इस सिलसिले में मोहहिस्सीन का कौल है कि “मारुफ” में जो बैत हो रही थी तो वह ये थी कि: → मर्ग के वक़्त चेहरा नही नोचेंगी, मातम नही करेंगी, हाय हाय नही करेंगी, गिरेबान नही फाड़ेंगी, और न ही चिल्लाएंगी, सारी जिंदगी अपने बालों को नंगा नही होने देंगी और अपने बाल बिखरने नही देंगी और उनके बाल किसी को नज़र नही आएंगे। इस पर वो बैत करें कि हमारे बाल किसी को नज़र नही आएंगे और किसी की नज़र हमारे बालों पर नही पड़ेगी। और सारी जिंदगी किसी ग़ैर मेहरम से गुप्तगू नही करेंगी यानी इस बात पर बैत करें कि वह किसी ना मेहरम से नही बोलेंगी। (तफसीरे कुरतुबी )

अगर ये ऐसी बात करने जाए **فَبَايَعْنِ** तो फिर उन की बैत वसूल कर लो, अगर ये बैत इस पर करना चाहती हैं ईमान की खातिर तो आप उन से बैत वसूल कर लो

**اسْتَغْفِرُ لِهِنَّ اللَّهُ** और फिर अल्लाह तआला से उन के गुनाहों की मग़फ़िरत की

दरखास्त भी करो। जो ख़ातीन इस पर बैत कर रही हैं, इस से पहले (मेरा फरमान पहुँचने से पहले) जो कुछ हो चुका है, तो ऐ मेहबूब सल्लल्लाहु अलैका वसल्लम! तुम मुझ से कहो तो मैं उन को माफ़ कर दूँगा यानि जिस को माफ़ करना है वह कहता है कि मेहबूब तुम मुझ से कहो **اسْتَغْفِرُ لِهِنَّ اللَّهُ** → ए मेहबूब! आप उन के लिये इस्तिफ़ार की दुआ अल्लाह तआला से करें और आप उन के लिये मग़फ़िरत तलब करें। तो फिर क्या होगा ?

**إِنَّ اللَّهَ عَفْوٌ رَحِيمٌ**

(तर्जुमा: बेशक अल्लाह तआला बख़्शने वाला, मेहरबान है)

## औरत अच्छाई या बुराई के पैमाने में

कुरआने मजीद हमारे घरों में मौजूद है, जिस वक्त कोई बाप अपनी बेटी को रुखसत करता है तो वह कुरआने मजीद के साथे में रुखसत करता है, कुरआने मजीद जहेज में दिया जाता है, ये एक रस्म है जो अदा की जाती है। लेकिन हकीकत ये है कि जो कुरआने मजीद कहता है उस को समझा जाए, उस के मुताबिक अमल किया जाए। इस सूरह मुमतहाना की आयत नंबर 12 का जो तकाज़ा है उस को अगर कोई इस्लाम की बेटी सामने रखे तो उस की पूरी जिंदगी नूर से भर जाएगी। थोड़ी सी उस को पाबंदी करना पड़ेगी, थोड़ा सा अपने आप को संभालना पड़ेगा। अगर औरत बिगड़ गई तो मुआशरे का सबसे बड़ा फितना है और शैतान का जाल है और उस को शैतान का जहरीला काँटा (या तीर) करार दिया गया और उस को फिल्लों की माँ कह दिया गया।

यही खातून मोमिना बनी और फिर उसने अपने आप को संभाला और कुरआने मजीद के साथे में रही और हज़रते सय्यिदा आयशा सिद्दीका रदियल्लाहु अन्हा की तालिमात का ज़ेवर पहना और हज़रते सय्यिदा फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की चादर के साथे में रही तो फिर उस को सादिका कहा गया, उस को कानिता कहा गया, उस को साबिरा कहा गया, उस को साइमा कहा गया, उस को साजिदा कहा गया, उस को राकिआ कहा गया, यही नस्ले नो का बहुत बड़ा मज़हर करार पाई, यही इंसानी नस्ल के निखार का बहुत बड़ा मम्बा और खेत करार पाई, उसी से तकवा के फूल खिले, उसी से परहेजगारी की बहार आई, यही सालेहीन की माँ कहलाई, उसी की गौद को जन्नत के मनाज़िर में से एक मंज़र कहा गया, उसी की तर्बियत को इंसान की बहुत बड़ी दर्सगाह करार दिया गया और उस एक औरत के शुस्ता/ एक्विटव किरदार को 70 सिद्दीकों से बड़ा किरदार करार दिया गया। क्योंकि उस ने कुरआने मजीद सीखा है और कुरआने मजीद को सुना है, नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान को सुन के पूरी जिंदगी उन फरामीन ए मुस्तफा के ज़ेरे साया बसर कर डाली है।

एक तरफ आज का माहौल, मोबाईल का इस्तेमाल, उस में पेकेजेज़ और घंटों गैर मेहरमों से बातें, इधर कुरआने मजीद का फरमान है कि: **وَلَا يَنْصَبِتُ فِي مَرْوَفٍ** मेरे मेहबूब जिस ने तेरा कलिमा पढ़ा है वह जिंदगी भर गैर मेहरम से नहीं बोलेगी, उस की किसी ना-मेहरम से बात नहीं होगी, उन से ये बैत वसूल करो और ये बैत लाज़िम है।

इधर एक जुमला भी गैर मेहरम से बोलना हराम है सिवाए उस मरीज़ा के जो अपना मर्ज़ बताना चाहती है, या किसी हाकिम के सामने गवाही देना चाहती है, सिर्फ़ उन चन्द सूरतों में रुखसत है। आज (मआज़ अल्लाह) गैर मेहरम से बातें करने को गुनाह नहीं समझा जा रहा और फिर टाईम के साथ साथ अपना ईमान जाया किया जा रहा है। इधर किसी गैर मेहरम से बोलना हराम कर दिया गया और अपनी दिली रगबत की बुनियाद पर बोलना और बातें करना, इस को नाजाइज़ करार दिया गया और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक दुखरे इस्लाम को बताया कि घर में कैसे रहना है और बाहर कैसे निकलना है, अगर घर में किसी की मौत का वक्त है तो उस वक्त कैसे रहना है, अगर शादी का मोका हो तो फिर कैसे रहना है—

आज (मआज़ अल्लाह) ये समझ लिया गया है कि शादी का मोका होता है तो उस मोके पे गोया एक मोमिना, मोमिना नहीं रहती, यानी उस को इस वक्त छुट्टी दे

दी गई है। पता ही नहीं चलता है कि ईसायन या डायन है, या कोई मुसलमान खातून है। कोई यदूदिया है या कोई मोमिना। शादी की तकरीबात को अपनी जिंदगी से यूँ खारिज करार दिया जाता है गोया कि जो इस्लाम के तकाजे थे वो बाकी जिंदगी में थे, आज का दिन उस से बरी है। इस में छोटे बड़े सारे शरीक होते हैं। शरीअत की खिलाफवर्जी की लहर में अक्सर हाजी और नमाजी भी बह जाते हैं। मगर जिसे अल्लाह बचाए। और फिर जिस वक्त कोई मर्ग या अफसोस वगैरह का मोका होता है तो उस वक्त जो बेसब्री और इस्लामी अहकामात की खिलाफवर्जी होती है, वह एक अलेहदा अलमिया है।

आज इस वक्त ये पैगाम वसूल करते हुए, कुरआने मजीद के फरामीन हमारे सामने हैं और ध्यान हमारा उस की तरफ है, अल्लाह तआला की मगफिरत की बारिश बरस रही है और सय्यदे आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगाहे नाज़ गुंबदे खिज़रा से अपनी उम्मत को देख रही है, ऐसे में दुख्तराने इस्लाम को अहद भी करना है और हम सब को इन अहकामात को समझना भी है लेकिन सिर्फ कानों की लज्जत के लिये नहीं बल्कि ईमान के वकार के लिये और ईमान की बहार के लिये कि चलो जब तक पता नहीं था कोई और मामला था हांलाकि ये लाज़िम है कि जिस वक्त कोई बालिग हो जाए, मर्द हो या औरत, तो जैसे नमाज़ फर्ज है ऐसे ही जिंदगी गुज़ारने का रस्ता जानना भी फर्ज है, जो नहीं पूछती और नहीं जानती वह मुजरिमा होगी और जो मर्द नहीं पूछता वह भी मुजरिम होगा।

अब कुरआने मजीद और रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरामीन और जिन हस्तियों को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिखाया उन का किरदार मुख़तसर सा पेश कर रहा हूँ ताकि मेरे लिये भी ज़रीया ए निजात बन जाए और आप सब के लिये भी ज़रीया ए निजात बन जाए।

### जन्नती महल

सब से मुश्किल वक्त वो होता है जब किसी का बाप फौत हो गया हो, किसी की माँ फौत हो गई हो, किसी का बेटा फौत हो गया हो, उस वक्त कुछ लोग कह देते हैं कि हमें कुछ न कहो जो कुछ हम से होता है वह हम करते हैं, जो कुछ जुबान पे आता है वह कहते हैं, शिकवा और गिले रव से करते हैं, जिस से ये पता नहीं चलता कि उस ने रब को माना भी है या नहीं माना, उस ने जब बच्चा दिया था तो उसने कोई कीमत वसूल नहीं की थी, अब अगर उस के दुनिया से चले जाने पर अपने रब से झगड़े और शिकायत करे तो फिर अल्लाह तआला नाराज़ हो जाएगा। और जहाँ सब्र का मंज़र होगा तो अल्लाह तआला फरिश्तों से कहेगा कि: जिन्होंने बच्चे की मय्यत पे खड़े हो के सब्र किया, फरिश्तों! उन के लिये नया महल जन्नत में तैय्यार करो और उस का नाम बैतुल हम्द रखो और कहो कि यह वह घर है जो बाप को सब्र करने पर मिल जाता है।

(शोअबुल ईमान)

### दर्से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम:

रसूले अकरम सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम की बारगाह में एक साहबिया रदियल्लाहु अन्हा आई, वह आप का यह दर्स सुन चुकी थी कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने इर्शाद फरमाया है कि

**"لَيْسَ مَثًا مَنْ لَطَمَ الْخُدُودَ، وَشَقَّ الْجُيُوبَ، وَدَعَا بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ"**

वह औरत मेरी उम्मत में नहीं है, वह हमारी नहीं, वह हम में से नहीं, वह हमारे तरीके पर नहीं

**لَيْسَ مَثًا** → वह हम में से नहीं, वह हमारे तरीके से खुद निकल गई।  
**مَنْ لَطَمَ الْخُدُودَ** → जिस ने मुश्किल घड़ी में अपने चेहरे को पीटना शुरू कर दिया और अपने रुख्सारों पर मारना शुरू कर दिया तो रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जिस ने ऐसा किया वो उम्मत से खुद निकल गई—

**شَقَّ الْجُيُوبَ** → जिस ने गिरेबान फाड़ा

ये ख्वातीन में आदतें हैं कि वह बे-सब्री में कपड़े फाड़ देती है, जिस ने ऐसे वक़्त में बे-सब्री से काम लेकर गिरेबान फाड़ा वह मेरी उम्मत में से नहीं। ये कितना बड़ा जुमला और झिड़की है और कितना झिनझोड़ रहे हैं, जो मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सारे जहाँनों के लिये रहमत बन कर आए हैं और जो ज़र्र ज़र्र पे अब्र करम बन के बरसे हैं और जिन्होंने देखा कि इंसानियत जहन्नम में जा रही है, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि

**فَأَنَا أَخَذُ بِحَجْرِكُمْ عَنِ النَّارِ** → तुम पतंगों की तरह छलांग लगा कर जहन्नम में जा रहे थे तो मेने तुम्हे कमर से पकड़ लिया और तुम्हे जहन्नम में नहीं जाने दूँगा। और तुम हो कि उसी में गिरते जाते हो।↓

حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَنَّهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ - رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ - أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ " إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ النَّاسِ كَمَثَلِ رَجُلٍ اسْتَوْقَدَ نَارًا، فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ جَعَلَ الْفَرَّاشُ وَهَذِهِ الدَّوَابُّ الَّتِي تَقَعُ فِي النَّارِ يَقَعْنَ فِيهَا، فَجَعَلَ يَنْزِعُ عَنْهُمْ وَيَغْلِبْنَهُ فَيَقْتَحِمْنَ فِيهَا، فَأَنَا أَخَذُ بِحَجْرِكُمْ عَنِ النَّارِ، وَأَنْتُمْ تَقْتَحِمُونَ فِيهَا " .

(सहीह बुखारी शरीफ 6483)

जिस औरत ने कलिमा ए इस्लाम पढ़ लिया, अब वाह इस मौके पे अपना गिरेबान न फाड़े। ये दोनों का निसाब है यानी मर्द और औरत का, मर्द ये न समझे कि हमारे लिये खुली छुट्टी है। लेकिन चूँकि ऐसे ज़्यादातर वाकिआत औरतों से सरज़द होते हैं, इस लिये उन का ज़िक्र किया गया है।

**شَقَّ الْجُيُوبَ** → "जिस ने गिरेबान फाड़ा वि हम में से नहीं"

इस का दूसरा मतलब ये है कि जिस ने कमीज़ के सामने गिरेबान बनवा लिया, जो बटन खुले रहने की सूत में बेपरदगी का बाइस है, वह इस्लाम की बेटी नहीं है।

**شَقَّ الْجُيُوبَ** → जिसने कमीज़ में सिर डालने के लिये गिरेबान सामने बनाया वह इस्लाम की बेटी नहीं है।

**وَدَعَا بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ** → अपने भाई या बेटे की वफात पर कहना कि तू कितना अच्छा था और अल्लाह तआला ने तुझे दुनिया से उठा कर कितना नुकसान किया। अल्लाह तआला को (मआज़ अल्लाह) तेरी कितनी ज़रूरत थी। इस तरह फौत



शुदा की तारीफ करना और अल्लाह तआला के बारे में ये कहना कि (मआज़ अल्लाह) अल्लाह को फौत हुए ईसान की ज़रूरत थी। जो औरत किसी के मर जाने पर इस अंदाज़ में आहो बका या इस किस्म के अल्फाज़ इस्तेमाल करेगी, इस अमल को सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने " **دَعَا بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ** " कहा है कि ये जाहिलियत की बातें हैं। जिस ने ऐसा किया तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि उस का तआल्लुक मेरी उम्मत से नहीं है। मेरी उम्मत में तो वो साबीरा, शाकीरा है कि जिस पर ऐसा वक़्त आ गया तो उस ने अल्लाह का शुक्र अदा किया।

आँखों में आँसू आने पर शरीअत मे पाबंदी नहीं है, हालते इज़तिराब में जो आवाज़ निकल जाए उस पर भी पाबंदी नहीं है लेकिन (मआज़ अल्लाह) अल्लाह को कोसना, दिगर अल्फाज़ और जुमले और जोर जोर से आवाज़ें बुलंद करना इस से मना किया गया है और फिर अल्लाह तआला को जो ताने दिये जाते हैं और अल्लाह तआला से शिकवे किये जाते हैं, उस से बतौरे खास नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मना किया और इर्शाद फरमाया कि जिस ने ऐसा किया वो हम में से नहीं, उस ने हमारे तरीक़े को छोड़ कर जाहिलियत के तरीक़े को अपना लिया।

### **बुलंद हौसला खातून**

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस तकरीर का असर कितना हुआ कि मदीना शरीफ में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तशरीफ फरमा थे कि एक ख़ातून आ गई, उस का नाम "उम्मे खुलाद" था वह उस मौक़े पे आई कि उन का बेटा जंग में शहीद हो गया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वापस तशरीफ ले आए तो ये हज़रत उम्मे खुलाद रदियल्लाहु अन्हा नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आ गई। जिस वक़्त नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास वो सहाबिया आई तो सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम को बड़ा तआज्जुब हुआ कि माँ हो और फिर उसका बेटा फौत हो चुका हो, न ही ही बेटे का चेहरा देखा हो। जिस वक़्त हज़रत उम्मे खुलाद रदियल्लाहु अन्हा नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार में पहुँची, सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम कहते हैं कि: उस ने चेहरे का निकाब किया हुआ था, चेहरा ढांपा हुआ था, वह अपने बेटे के बारे में पूछ रही थी जो शहीद हो चुका था। बाज़ अस्हाबे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कहने लगे ऐ उम्मे खुलाद! तुम अपने शहीद बेटे के बारे में पूछने आई हो और तुम ने इतना निकाब किया हुआ है। सिन्फे नाजुक को जब ऐसा तीर लगता है तो हौश उड़ जाते हैं, ये ताज़ा सदमा है, इस वक़्त तुम्हे ख़बर पहुँची है कि बेटा शहीद हो गया है और तुम निकाब कर के इतने सन्न से आई हो ? सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम तआज्जुब से देख रहे थे, इस्लाम की बेटी सन्न का कितना बड़ा कोहे हिमाला होती है और जिसने नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सीरत के सबक पढ़े हैं उस का किरदार कितना सुथरा किरदार होता है और इस हद तक उनको रब्बे जुलजलाल अज़मतें अता फरमाता है कि उस वक़्त उन्होने ऐसा जुमला बोला कि कियामत तक की बेटियों को एक निसाब अता फरमाया।

हज़रत उम्मे खुलाद रदियल्लाहु अन्हा से जब सहाबा ए किराम

रदियल्लाहु अन्हुम पूछ रहे थे कि तेरा बेटा शहीद हो गया है और चेहरे का इतना पर्दा इस वक़्त भी किया हुआ है और तुम इतने वक़ार के साथ पर्दे की हालत में आकर नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अपने बेटे के बारे में पूछ रही हो, तो हज़रते उम्मे खुलाद रदियल्लाहु अन्हा कहने लगी कि: मेरे मेहबूब के गुलामों मेरा बेटा शहीद हुआ है, मेरी हया तो शहीद नहीं हुई है। शहादत मेरे बेटे की हुई है, शहादत मेरी हया की तो नहीं हुई है। मेरे बेटे का जनाज़ा उठा, मेरी हया का जनाज़ा तो नहीं निकला। ये सच है कि मेरे दिल का टुकड़ा मुझ से जुदा हो गया और बेटे की शहादत की ख़बर नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुन रही हूँ, मगर उन का जो दिया हुआ सबक़ है मुझे उस से पता चल रहा है, मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खुला चेहरा सामने हो तो बच्चे की शहादत पे बेसब्री क्यों करूँ ?

**तुम्हारे दम से है आबाद मेरा गुलशने हस्ती।**

**जो तुम हो तो ख़ज़ाओं का कोई ख़तरा नहीं मुझ को।।**

“या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आप के सदक़े मुझे सबकुछ मिला, आप के ज़ेरे साया इस ने ज़ाम—ए—शहादत नोश कर लिया” सहाबिया हैं, सिन्फे नाजुक हैं और जवाब दे रही हैं “ ऐसा मौका है तो मैं अपनी हया पर पानी नहीं फेरूंगी, अपनी हया को बरकरार रखूंगी और जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दिया हुआ तरीका है उस तरीके के मुताबिक़ रहूंगी। जाहिलियत के ज़माना कैसा था ? इन्क़िलाब कैसे आया, ये बैत करने वाली ख्वातीन उन्होंने नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बैत की लाज कैसे रखी है ? ऐसे गंभीर हालात में जहाँ कलेजा मुँह को आता है और इंसान का जिगर पिघल जाता है, ये सिन्फे नाजुक फिर भी सब्र कर के क़यामत तक की इस्लाम की बेटियों को बता रही थीं कि बाद में आने वालियों! तुम को देखना है कि जिन्होंने बराहे रास्त नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पढ़ा था उन का किरदार क्या है ? , हमारे किरदार को देख कर (ऐ बाद में आने वालियों) तुम को अपना किरदार संवारना है कि जब मुसीबत आ जाए तो वह मुसीबत किसी और चीज़ पर हो, तुम्हारी शर्मा हया पर मुसीबत न हो, तुम्हारे पर्दे का जनाज़ा न निकल जाए, बल्कि उस वक़्त भी पर्दे में रहकर ये साबित करो कि हम ने किसी और का कलिमा नहीं पढ़ा बल्कि हम ने गुंबदे ख़िज़रा के मक़ी का कलिमा पढ़ा है।

आज हमे ऐसे नाम—निहाद मुफ़क्किरीन का सामना जो कहते हैं कि चेहरे का पर्दा होता ही नहीं है, बाकी पर्दा है चेहरे का कोई पर्दा नहीं । एन.जी.ओज़ में मौजूद मगरिब—ज़दा ख्वातीन कि जिन्होंने मुख्तलिफ़ दफ़तर खोल रखे हैं, इस्लाम की बेटियों को बेराहरवी की तरफ़ लगाना चाहती हैं। दूसरी तरफ़ ऐसे नाम—निहाद मुफ़क्किरीन हैं कि मुआशरा पहले ही आतिश—फ़शां है, फिर कहते हैं कि चेहरे का कोई पर्दा ही नहीं है। उन के मज़हबी जुलूस में औरतें बेहिजाब टांगों पे टांगें चढ़ा के बेठी होती हैं। उन लोगों को शर्म नहीं आती कि कुरआनो सुन्नत की कितनी धज़्ज़ियाँ उड़ाई जा रही हैं और इधर मेरे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नूर नगर मदीना शरीफ़ है कि हज़रते उम्मे खुलाद रदियल्लाहु अन्हा का बेटा भी शहीद हो चुका है मगर फिर भी चेहरा ढांपा हुआ है और बताना चाहती हैं कि हम ने जिन से पर्दे के सबक़ सीखे हैं, उन्होंने हमें चेहरे का पर्दा भी बताया है।

## उम्मुल मोमीनीन रदियल्लाहु अन्हा का अमले मुबारक

हज़रत जैनब बिनते अबी सलमा रदियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि हज़रत उम्मे हबीबा रदियल्लाहु अन्हा जो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जौजा मोहतरमा हैं, हज़रत अमीर मुआवियह रदियल्लाहु अन्हु की हमशिरह हैं, हज़रत अबू सुफियान रदियल्लाहु अन्हु की बेटी हैं, जब उन को पैग़ाम पहुँचा कि हज़रत अबू सुफियान रदियल्लाहु अन्हु फौत हो गए हैं, वफ़ात के बाद तीसरा दिन जब गुज़र रहा था तो आप ने ज़र्द रंग की खुशबू मँगवाई और खुशबू अपने चेहरे पे लगाई और अपनी हथेलियों पे लगाई। जो औरतें आपके पास आई हुई थीं उन से कहा कि तुम ने मुझे ये काम करते हुए देखा है ? मुझे इस चीज़ की कोई ज़रूरत नहीं थी, मैं इन खुशबुओं को पसंद नहीं करती थी मगर इस वक़्त मेने ये खुशबू क्यों लगाई ? फरमाती हैं कि “अगर मेने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से ये न सुना होता कि जो औरत अल्लाह तआला और आखिरत के दिन पर ईमान रखती है उस के लिये हलाल नहीं कि वो तीन दिनों से ज़्यादा किसी पर सोग मनाए, सिवाए जौज के कि अगर उस का जौज फौत हो जाए तो फिर वो चार महीने दस दिन हालते सोग में रहेगी” तो कभी खुशबू न लगा। ती।

(सहीह बुख़ारी शरीफ)

इस के सिवा ख़्वाह वालिद फौत हो जाए, बेटा फौत हो जाए उस औरत के लिए जाइज़ नहीं कि सोग की हालत में रहे कहने लगी कि मेरे अब्बा जी फौत हुए थे, तीन दिन मुकम्मल हुए हैं मैं खुशबू लगाकर बताना चाहती हूँ कि मेरा आखिरत पर भी ईमान है और मेरा अल्लाह तआला पर भी यकीन है, मेरा रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर भी यकीन है। मेने सिर्फ़ इसलिए खुशबू लगाई है ताकि दुख़्ताराने इस्लाम को पता चले कि हमारी अम्मी उम्मे हबीबा रदियल्लाहु अन्हा के अब्बा जी जब फौत हुए थे तो उन्होंने नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान को पसे-पुशत नहीं डाला बल्कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमान को सामने रखा और फरमाया कि मुझे खुशबू लगाने की कोई हाज़त न थी लेकिन खुशबू इस तरह लगाना सोग के ख़त्म करने का ऐलान है तो मैं ज़र्द रंग की खुशबू लगाकर बता रही हूँ कि जो नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना है उस पर अमल कर के हम साबित करना चाहती हैं कि हमने जाहिलियत की सारी रस्में छोड़ दी हैं और हम ने नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गुलामी का पट्टा गले में डाल लिया है। रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरतों को ऐसा निसाब अता फरमाया जो कि पूरी ज़िंदगी के लिए काफ़ी है।

इस के साथ साथ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन की रहनुमाई फरमाई और सहाबियात ने अमल कर के दिखाया उन की मुहब्बत के नारे खोखले नहीं थे, नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जहाँ खड़ा कर दिया है इस्लाम की बेटी ने सारी ज़िंदगी वहीं गुज़ारी है, चूँकि यहाँ से आगे जाने को सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हराम कहते हैं तो मैं सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्यार कर के आगे चली जाऊँ, ये कैसे हो सकता है ? ये सुन्नते मोतहहरा का जज़्बा था कि जिस पर पूरी मिल्लते इस्लामिया में अगर हम नज़र दौड़ाएं तो हमें ऐसी माँएं नज़र आएंगी कि जिन्होंने अपने सालेह किरदार के साथ आज तक इस्लाम की हदों पर पहरा दे के दिखाया है।

## **खातूने जन्नत सरकारे कौनैन सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वक्ते विसाल**

हज़रते सय्यिदा फातिमा रदियल्लाहु अन्हा शहजादी सरकारे कौनैन की हैं, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जिगर का टुकड़ा हैं, हज़रते सय्यिदा फातिमा तय्यिबा, ताहि़रा, सालेहा, आबिदा रदियल्लाहु अन्हा का वक्ते विसाल करीब था तो उन्होने क्या किया ? अपना मुँह किबला शरीफ की तरफ फेर लिया, फिर दायाँ बाजू नीचे रखा उस के ऊपर अपना चेहरा रख कर किबला की तरफ कर दिया। किबला की तरफ इस लिये किया कि कियामत तक जो हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की खादिमा होगी या फातिमा रदियल्लाहु अन्हा से प्यार करने वाली होगी उस को सबक मिल जाए कि फातिमा रदियल्लाहु अन्हा दुनिया से जा रही थी, रूह निकल रही थी, तो फिर भी आप का चेहरा किबला की जानिब था। वह हज़रते फातिमा रदियल्लहु अन्हा से अपनी मुहब्बत का दावा न करे जिसका सिर सजदे में झुकता ही नहीं। हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की रूह निकल रही है और चेहरा किबला शरीफ की तरफ है और ये असर है कि रूह निकलते वक्त सिर किबला की तरफ है तो हज़रते इमाम हुसैन रदियल्लाहु अन्हु का सिर सजदे में है। इधर सय्यिदा फातिमा रदियल्लहु अन्हा ने खुद अपना चेहरा किबला की तरफ किया , अपने चेहरे को दाएँ हाथ पे रखा और बता दिया कि जो मिल्लते इस्लामिया की बेटियाँ हैं और मुझ से जो प्यार करने वालियाँ हैं और जो कियामत तक मेरा नाम लेंगी उन को अपना पैग़ाम देना चाहती हूँ कि जब तक बदन में जान हो तो फिर किबला की तरफ हाज़िरी हो, रब के दरबार में सजदा हो, और अल्लाह तआला को भूल कर नमाज़ के वक्त को छोड़ न दिया जाए, अल्लाह तआला के दरबार की हाज़िरी बरकरार रखी जाए ताकि रूह जब निकल रही हो तो सिर किबले की तरफ झुक रहा हो।

## **एक सवाल एक तड़प**

हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा का नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल और एक तड़प, जिस में इस्लाम की बेटी के लिए हज़ारों सबक मौजूद हैं। हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु इस के रावी हैं, हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु अपने दोस्तों को ये हदीस सुनाया करते थे और इर्शाद फरमाया करते थे कि : **मै तुम्हे अपना और हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा, जो नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की साहबज़ादी हैं, का एक वाकिआ न सुनाऊँ, मै तुम्हे अपनी आप बीती न सुनाऊँ, हमारा नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आने जाने का मामला उस के बारे में तुम्हे न बताऊँ ?** अब लोग शोक से कहते थे कि बताओ, वो कौनसी बात है कि जिस को तुम इस अंदाज़ में बयान करना चाहते हो ? हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु सुनाया करते थे कि:→हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की शरिस्सयत इतनी बड़ी और उन का इतना बड़ा मुक़ाम है कि जिन के घर में चक्की कभी फरिश्ते भी आ कर चलाते थे और आटा पीसते थे लेकिन उनका खातूने खाना होने के लिहाज़ से किरदार कितना था और वह अपने घर को कैसे चलाती थी और घर के चलाने में उन का तरीका क्या था ? फरमाने लगे कि: **हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा अपने घर में आटा पीसने ले लिए अपनी चक्की चलाती थी और उस चक्की की दस्ती के निशान हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा के हाथों में पड़ चुके थे।**

आज ये हदीस सुनते वक़्त दुख़्तराने इस्लाम को सोचना है कि वह फातिमा रदियल्लाहु अन्हा जो जन्नती औरतों की सरदार है, उमूरे ख़ाना में अगर उन का तकाज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से होता तो सोने का घर बना दिया जाता, हज़रत फातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने इतनी चक्की चलाई कि हाथों में निशान पड़ गए, उन्होने कुएं से मश्कीजे इतने भरे कि जब कंधे पर रस्सा रख कर खींचती थी तो छाती पे निशान बन चुका था, अपने बच्चों के लिए और अपने घर के लिए रोज़ाना पानी के डोल कुएं से खींचती हैं। एक तरफ हाथों पे निशान हैं और दूसरी तरफ छाती पे निशान है और सीने के ऊपर के हिस्से में निशान पड़ चुके हैं। फिर हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु कहने लगे कि “और घर में झाड़ू दिया यहाँ तक कि आप के कपड़े गर्द—आलूद हो गए।

आज के दौर में घर की सफाई एक औरत के लिए आर और शर्म है और कहती है कि दस खादिमाएं हों, वह काम करें। मैं घर का काम क्यों करूंगी, मैं तो इतने बड़े बाप की बेटी हूँ। तो कौन है जो हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा से बड़े बाप की बेटी है— हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा उमूरे ख़ाना में कैसा किरदार अदा करती हैं। हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा घर में झाड़ू देती थी यहाँ तक कि कपड़े गर्द—आलूद हो जाते थे। जब इतनी मुशक्कत करती थीं तो उसी दौरान हमें पता चला कि नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास कुछ गुलाम और लोंडियाँ आ गई हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाब ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम में उन्हें तकसीम करना चाहते हैं। हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि: “मेने कहा कि फातिमा! वक़्त अच्छा है, चलो अपने अब्बा जी के पास और एक लोंडी मांग कर ले आओ और वह तुम्हारे साथ घर में काम करे, तुम्हारा क्या हाल हो गया है घर में काम करते हुए। तुम अपने अब्बा जी के पास जा कर कोई खादिमा ले आओ, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम में तकसीम करेंगे तो हमे भी एक खादिमा मिल जाएगी। हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा ने अपने शौहरे नामदार की बात मान ली। जब सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आई तो देखा कि नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तो परवानों के झुरमुट में हैं, दाएं—बाएं सहाबा ए किराम रदियल्लाहु अन्हुम बैठे हैं, लोग अपनी अपनी हाज़त पेश कर रहे हैं, रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल पूछ रहे हैं और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जवाब दे रहे हैं

अब देखो कि सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लमने दीने इस्लाम को कितना टाईम दिया। वह बेटी जो जिगर का टुकड़ा है, उन को यह हौसला न हो सका कि अब्बा जी मैं आई हूँ, मैं बात करबना चाहती हूँ, उन खादिमों को अपने पास से हटा दें, ये कहीं बैठ जाएं, इंतज़ार करें, पहले मैं मुलाकात कर लूँ। इस दीन ए इस्लाम को इतना प्यार दिया है मेहबूब अलैहिस्सलाम ने कि प्यारी फातिमा ये न कह सकी कि जो पास बैठे हैं उन को उठा दो और और मैं अपनी बात कर लूँ। हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा कहने लगीं कि जब मेने लोगों को मसाइल पूछते देखा तो मैं खुद समझ गई और मैं वापस आ गई हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि दूसरे दिन मैं भी हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा के साथ गया। हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दर ए पाक़ पर पहुँच गई जब

हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा वहाँ पहुँची तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि ऐ फातिमा! तुम बताओ तो क्या हाजत है ? किस काम को आई हो ? हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा ख़ामोश हो गई हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मेने कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! ये चुप करा गई हैं, मैं बताता हूँ कि ये क्यों आई हैं ? हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु ने कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साहबजादी आप की है और आटा पीसने की चक्की इतनी चलाती है कि इन के हाथों में निशान पड़ गए हैं, इन्होंने मश्कीजे इतने उठाए हैं कि छाती पर निशान बन गए हैं। जब आप के पास इतने खादिम आ गए हैं तो मेने उन (हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा) को कहा कि चलो हम भी चल के मांगते हैं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ादिमा दे दें तो कुछ काम घर में आप करें और कुछ काम वो ख़ादिमा करें। जिस मुशक्कत में हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा पड़ी हुई हैं मैं चाहता हूँ कि वह बड़ी मुशक्कत से बच जाएं।

### **अब इस में कई पहलू काबिले गौर हैं:**

आज दामाद के बारे में कोई ससुर ऐसी बातें सुन ले तो वह कहता है कि उस ने तो मेरी बेटी को कोई सहूलत ही नहीं दे रखी, मेरी बेटी खुद आटा पीसती है, खुद मश्क़ीजे उठा रही है और खुद झाड़ू दे रही है। अपने दामाद को ससुर झिड़कियाँ देना शुरू कर दे कि ये तुमने क्या किया ? मगर मेरे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु से एक लफ़्ज़ भी ऐसा ज़िक्र नहीं किया और इन चीज़ों पे सुकूत बताता है कि ये काम ख़ातूने ख़ाना के हैं, अगर उस को ये करने पड़ते हैं तो इस में कोई कबाहत/ख़राबी नहीं है। ये काम उस ख़ातूने ख़ाना को ही करने चाहिए। हाँ! अगर किसी ख़ाविद के पास सहूलत के मौके हैं तो वह फराहम करे।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये चीज़ें देख लीं और सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा के साथ बेपनाह मुहब्बत थी। तबई तौर पर भी ये तकाज़ा हो सकता था कि पता ही नहीं चला कि इतनी मुशक्कत हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा कर रही हैं, आज के बाद ऐ फातिमा ऐसा न करना, मैं अभी बंदोबस्त कर देता हूँ। वह चाहें तो जन्नत की हज़ारों हूरें हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की देहलीज़ पर आकर खड़ी हो जाएं, मगर मेरे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जुमला क्या था ? समझते थे कि आज मैं अपनी बेटी फातिमा के लिये हज़ारों हूरें तो खड़ी कर सकता हूँ मगर कल उम्मत की बेटियाँ भी तो होंगी। ऐसा निसाब दूँ कि उन उम्मत की बेटियों को भी निसाब मिल जाए। ऐसी चीज़ें दूँ कि वह सिर्फ़ मेरे जिगर के टुकड़े को ही नहीं बल्कि मेरे उम्मत की जिगर-पारों को भी निसाब मिल जाए। मेरे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के यहाँ कमी तो कोई न थी, जो फरमाते फौरन मयस्सर हो जाता और हमेशा के लिये ऐसा सिलसिला जारी हो जाता – लेकिन रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लफ़्ज़ क्या हैं, ये सबक है उस बाप के लिये जो अपनी बेटी को ब्याह के भेजता है, जब वह अपने बाप को कुछ आ कर कहे तो वह आगे उस को क्या कहे ? बाप कैसे दिलासा दे और बाप कैसे तर्बियत करे, बाप कैसे उन ख़ानदान को आबाद रखने के लिये अपना

किरदार अदा करे ? सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि: ऐ फातिमा! खुदा से डरो। वह जो पहले ही डरने वाली फातिमा है, रात मुसल्ले पे गुजर जाती है और दिन रोज़े में गुजर जाता है, मुशक्कत भी करती हैं) हमारे नबी फरमाते हैं कि ऐ फातिमा खुदा से डरो! अपने रब का फरीज़ा अदा करती रहो और घर का काम ब-दस्तूर जारी रखो, जो तुम्हारे अहल का काम है, जो हज़रते अली रदियल्लाहु अन्हु के घर में कर रही हो, ये काम करती रहो। और तरतीब बयान कर दी कि **तक्वा**, फिर **अपने रब का फरीज़ा** और फिर **अपने शौहर की ख़िदमत**।

सय्यदा फातिमा रदियल्लाहु अन्हा को सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निसाब दे रहे हैं, अगर आप अपनी बेटी के लिए जो चाहते वह एक मिनट से भी पहले मयस्सर हो जाता, लेकिन फरमाया कि क़यामत तक फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की ख़ादिमाएं भी आएंगी, हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा से प्यार करने वाली कनीज़ें आएंगी तो सब के लिए जामेअ निसाब हो।

ऐ फातिमा! तुम अपने रब से डरती रहो और अपने रब का फरीज़ा अदा करती रहो और फिर अपने अहल का जो काम करती हो मुसलसल करती रहो, इस में कोई हरज नहीं है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ये जुमला वालिदैन के लिए दर्से हयात है कि अपनी बेटियों को ऐसे मुआमलात में जिस वक़्त बताएं और समझाएं तो ये बातें बताएं कि एक है रब का फर्ज़, फिर है उस घर वाले का फर्ज़ और उस की ख़िदमत। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि ऐ फातिमा! तुम आई हो तो तुम्हें इस वक़्त खाली नहीं भेजा जाएगा, तुम्हें दूंगा तो क़यामत तक की बेटियों को भी दूंगा।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इर्शाद फरमाते हैं: जब काम काज से फारिग हो कर नमाज़ पढ़ कर लेटने लगे तो एक काम करना। तुम्हें तैतीस (33) मरतबा "सुब्हान अल्लाह" कहना है, तैतीस (33) मरतबा "अल्हम्दुलिल्लाह" कहना है और चौतीस (34) मरतबा "अल्लाहु अक़बर" कहना है। मेरी बेटी इस तरह ये सौ (100) बन जाएगा। ये वज़ीफा तुम्हारे लिये ख़ादिमा से बेहतर है। वो ख़ादिमा तुम्हारे साथ इतना सपोर्ट नहीं करेगी जितना ये तस्बीह तुम्हारा सपोर्ट करेगी। सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बारगाह में इस लिए गई थी ताकि बोझ ख़त्म हो जाए लेकिन बज़ाहिर तो बोझ और बढ़ गया, हकीकत में नहीं। आज जैसे लोगों का दिमाग़ हो तो कहें कि " गए थे नमाज़े बख़्शवाने, रोज़े गले पड़ गए", हम छुट्टी लेने गए थे मुफ़्ती साहब ने और लाज़िम कर दिया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि ऐ फातिमा (रदियल्लाहु अन्हा)! तुम मुझ से ख़ादिमा मांगने आई हो, ख़ादिमा से बड़ी चीज़ दे रहा हूँ और ये तस्बीहे फातिमा है, सोते वक़्त ये तस्बीह पढ़ लिया करो ये तुम्हारे लिए ख़ादिमा से बेहतर है। यानी ख़ादिमा तुम्हारे साथ काम कर केर इतना सपोर्ट नहीं करेगी, ख़ादिमा के काम करने से इतनी रिलीफ़ नहीं मिलेगी, इतना सुकून नहीं मिलेगा जितना सौ (100) बार इस ज़िक्र से तुम्हें सुकून मिलेगा।

### **अज़ीम बाप की अज़ीम बेटी के लफ़्ज़ सुनो:**

ये नहीं कहा कि अब्बा जी मैं काम कर कर के थक जाती हूँ, ख़ादिमा लेने आई थी, आप ने और लाज़िम कर दिया। क्या शान है हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा की,

कहने लगीं कि मेहबूब तुम्हारी फातिमा रब से भी राज़ी है और रब के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी राज़ी है। हज़रते फातिमा रदियल्लाहु अन्हा के कौल के मुताबिक़ ये ऐ मेरे अब्बा जी! ये ज़हन में ख़्याल न लाना कि बच्ची आई थी, उस ने मांगा था और जो उस ने मांगा था मेने वह नही दिया, मेरे अब्बा जी मै अपनी तरफ से इज़हार करती हूँ कि "मै रब से भी राज़ी हूँ और रब के नबी से भी राज़ी हूँ दोनों बातों का बतौरे खास ज़िक्र कर के इस बात को कयामत तक आने वाली उम्मत की बेटियों को बताया कि ऐ दुख़्ताराने इस्लाम! जहाँ रब का नाम ज़बान पर आना चाहिए वहाँ रब के मेहबूब का नाम भी ज़बान पर आना चाहिए और ये कहो कि मै रब से भी राज़ी हूँ और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से भी राज़ी हूँ।

ऐसे मुक़ाम पर अल्लाह तआला ये एजाज़ अता फरमाता है कि जिस वक़्त एक इंसान ऐसे फ़ैसलों पे राज़ी होता है और ये कुरआने मजीद का फ़ैसला है । आज इतना वबाल आ चुका है और इतनी नाम-निहाद रौशन ख़याली ने मर्दों-ज़न के मुँह खोल दिये हैं कि जब कहा जाता हू कि ये शरीआत है और ये कुरआनो सुन्नत है, तो आगे से जवाब कई किस्म के मिलते हैं। कोई कहता है कि "नही! हमारा भी हक़ है" , "आख़िर अक्ल की भी कोई मांग है" , "आख़िर ज़िंदगी भी कुछ गुज़ारना है" , "आख़िर दुनिया भी कुछ कहती है"— इस तरह की बातें सामने आती हैं, मगर इधर कुरआने मजीद कहता है कि:

﴿وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا لِمُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللَّهُ وَرَسُولُهُ أَمْرًا أَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ أَمْرِهِمْ﴾  
(कुरआन :सूरह अहज़ाब, आयत नंबर 36)

( तर्जुमा ए कंजुल ईमान:—और न किसी मुसलमान मर्द न मुस्लमान औरत को पहुँचता है कि जब अल्लाह व रसूल कुछ हुक्म फरमा दें तो इन्हें अपने मुआमले का कुछ इख़्तियार रहे। )

जब अल्लाह तआला फ़ैसला कर दे और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़ैसला कर दें तो किसी मोमिन और मोमिना के लिए ये जाइज़ नही कि वह आगे अपनी ज़बान खोले, बल्कि चुप हो जाए, सर तस्लीमे—ख़म कर दे कि जो सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है, जो शरीअत में आ गया है, जो कुरआने मजीद ने कह दिया है, उस की पाबंद हूँ। मै किसी फ़ैशन—परस्त औरत की बात नही सुनूंगी, मै किसी मगरिब—ज़दा ख़ातून के जाल में नही आऊँगी, मै किसी दुनिया की लीडर के फ़ैशन की तरफ नही देखूँगी, मेरे सामने मेरे रब का कुरआन है और मेरे नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जो मु ख़्तलिफ़ सबक़ दिये हैं उन में से एक घर के अंदर रहना और ज़िंदगी का सफ़र तै करना है— आज अल्लाह तआला हर बन्दे के घर को शरीअत का रंग अता फरमाए। लोग आकर ऐसी ऐसी दास्तानें बयान करते हैं कि इंसान सुन के हैरान रह जाता है कि कलिमे का असर कितना बाकी है— ऐसी ऐसी खुराफात औरतों में आ गई, ऐसे ऐसे फ़ैशन , ऐसी ऐसी हिमाकतें औरतों में आ गई हैं कि अक्ले सलीम भी उन चीज़ों की इजाज़त नही देती। आज इस्लाम की बेटी को रिमाईंड करना है कि उस ने कलिमा किस का पढ़ा था ? कलिमा ए इस्लाम पढ़ते वक़्त कहा था कि अब मर्जी अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की चलेगी, मेरी कोई मर्जी नही चलेगी। या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो आप कहें वही मेरी शरीअत, जो आप का



फैसला वही मेरा लाईफ कोड और मेरी जिंदगी का निसाब होगा। मगर राहे जिंदगी में चलते चलते भूल गई। कभी किसी सनम खाने में, कभी किसी फैशन-कदे में और कभी किसी ब्यूटी-पार्लर में और कभी किसी फैशन-शो में और कभी किसी मेले-ठेले में। उसे याद न रहा कि मेने क्या अहद किया था और कलिमा क्या पढ़ा था ?

## औरत और लिबास

حَدَّثَنَا صَدَقَةُ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عِيْنَةَ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ هِنْدٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، وَعَمْرٍو، وَبَحْبِيِّ بْنِ سَعِيدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ هِنْدٍ، عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ اسْتَيْقِظَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ لَيْلَةٍ فَقَالَ " سُبْحَانَ اللَّهِ مَاذَا أَنْزَلَ اللَّيْلَةُ مِنَ الْفَتَنِ وَمَاذَا فَتَحَ مِنَ الْخَزَائِنِ أَيَقْظُوا صَوَاحِبَاتِ الْحَجَرِ، قُرْبَ كَاسِيَةٍ فِي الدُّنْيَا غَارِيَةٍ فِي الْآخِرَةِ ".

मेरे आका हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया , इस को हज़रते उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं:

→ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ، قَالَتْ اسْتَيْقِظَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاتَ لَيْلَةٍ فَقَالَ " سُبْحَانَ اللَّهِ " हज़रते उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे हुजरे में थे। एक रात बेदार हुए और फरमाया "सुब्हान अल्लाह"।

मेरे नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निगाह है, बैठे तो हज़रते उम्मे सलमा रदियल्लाहु अन्हा के हुजरा ए मुबारक में थे मगर उठते ही फरमाया— "सुब्हान अल्लाह"। "सुब्हान अल्लाह" कहने का मतलब क्या था, वह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया:

مَاذَا فَتَحَ مِنَ الْخَزَائِنِ → "आज की रात कितने खज़ाने खुल गए"

नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को बेदार हो कर "सुब्हान अल्लाह" खज़ानों के खुलने पर कह रहे हैं। फरमाया

"कितने खज़ाने मेरी उम्मत के लिए खुल गए" और साथ ही इर्शाद फरमाया कि

مَاذَا أَنْزَلَ اللَّيْلَةُ مِنَ الْفَتَنِ → "कितने फितनों के दरवाज़े खुल गए"

इस के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि

أَيَقْظُوا صَوَاحِبَاتِ الْحَجَرِ، → " हुजराओं को जगाओ"

इस के बाद सरकार सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया और कयामत तक की दुख्तराने इस्लाम को सबक दिया कि :—

قُرْبَ كَاسِيَةٍ فِي الدُّنْيَا غَارِيَةٍ فِي الْآخِرَةِ → " बहुत सी औरतें दुनिया में जो (बारीक) लिबास पहनने वाली हैं, हश्र में नंगी होंगी"

(सहीह बुखारी शरीफ बाल्लैल्लैल् एल्एट्हा बाल्लैल्लैल् हदीस नंबर 115)

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस जुमले के तीन मतलब हैं:

1. बहुत सी औरतें दुनिया के अंदर महलों में रह रही हैं, उन के बीस-बीस, चालीस-चालीस सूट हैं, हर फंक्शन में जाने का अलग सूट है, बड़े नाज़ और बड़े न खरे हैं। यही औरतें आज जिन को दूसरे फंक्शन में पहला वाला कपड़ा पहन कर जाना पसंद नहीं, कयामत के दिन बदन पर एक इंच कपड़ा भी नहीं होगा। इस की वजह क्या है ? उन का किरदार ऐसा है कि उन्होने मेरी शरीअत को छोड़ दिया , फैशन को

अपना इमाम बना लिया, कलिमा रिवाज का पढ़ लिया।

**فَرَبَّ كَاسِيَةٍ فِي الدُّنْيَا** → बड़े-बड़े नवाबों की बीवियाँ, बड़े-बड़े जागीरदारों की बीवियाँ, बड़े-बड़े मालदारों की बीवियाँ जिन से दुनिया में कपड़े संभाले नहीं जाते, इतने ज्यादा सूट हैं मगर अमल से इतनी कोरी हैं कि कपड़ा तो तक्का का कपड़ा है, कपड़ा है तो परहेजगारी का, कपड़ा है तो सुन्नते नबवी का जो आज वो कपड़ा पहनेगी कल कयामत के दिन भी पर्दे में होगी और आज जिस ने वो कपड़े छोड़ दिये, आज जिस ने शरीअत की तरफ पीठ कर ली, और आज जिस ने शरीअत की नमाज़ को छोड़कर अपने फ़ैशन को पेशे-नज़र रखा और समझती है कि हफ़्ते में दूसरा सूट नहीं होगा तो मेरी इज़्ज़त नहीं होगी। ये इज़्ज़त के बारे में सोचती है जबकि हश्र में ये नंगी हो चुकी होगी। दुनिया में बहुत से सूट पहनने वाली आख़िरत में नंगी हो चुकी होगी मेरी शरीअत से ग़ददारी करने की वजह से, मेरी शरीअत को छोड़ने की वजह से उन्हें ये अंजाम देखना पड़ेगा।

इस का मतलब ये नहीं कि कपड़े ज्यादा पहनना जाइज़ नहीं। अल्लाह के दिये हुए माल को खर्च करना जाइज़ है और नेअमत का इज़हार भी जाइज़ है मगर उस नेअमत में रब को भूल जाना, उस नेअमत के नशे में शरीअत की तौहीन करना और शरीअत को पसे-पुश्त डाल कर शैतान का खिलौना बन जाना, इस की हदीस में मज़म्मत हो रही है और इसराफ़ (फ़ुज़ूल-खर्ची) की मज़म्मत हो रही है। दुनिया में बहुत सी औरतें ऐसी हैं जिनके सूट गीने नहीं जा सकते मगर कयामत के दिन एक इंच कपड़ा मयस्सर नहीं होगा और बिल्कुल नंगी हो चुकी होगी। उनको सोचना चाहिए कि ऐसी शर्मिंदगी का उन को सामना क्यों करना पड़ रहा है ? लिहाज़ा आज किरदार सही करें ताकि दुनिया में भी पर्दे में रहें और उक़बा में भी पर्दे में रहें।

2. दूसरा मतलब है कि "दुनिया में कपड़ा उलटने वाली आख़िरत में नंगी होगी, इस का मानी ये है कि दुनिया में कपड़े पहनती है मगर बहुत तंग पहनती है जिन से आज़ा (बदन के हिस्से) पहचाने जाते हैं और जिस्म के आज़ा की शिनाख़्त हो सकती है, वह ये नहीं देखती कि शरीअत ने पर्दा लाज़िम किया है, और शरीअत ने पर्दे का हुक्म दिया है। वह ये कहती है कि अब नया फ़ैशन आया है। कपड़ा सिमट सिमट के, कम हो हो कर, इंसानी बदन पर तंग होते होते, बाजू पीछे हटते हटते, दामन सिमटते सिमटते ये सूरते हाल बन गई है कि वह कपड़े पहने हुए भी यूँ ही हो गई जैसे नंगी होती है। कयामत के दिन बता दिया जाएगा कि उन्होंने कुछ नहीं पहना। ये बाज़ारों में नंगियाँ चलती थी, ये रिश्तेदारों के पास दुनिया में नंगियाँ आती थीं, क्योंकि उन के लिबास टाईट थे, कपड़े तंग थे, जिन से बदन के मुखतलिफ़ आज़ा पे कपड़ा नहि होता था, वो आज़ा नंगे होते थे, उन का अंजाम ये होगा कि अल्लाह तआला उन औरतों को नंगी औरतों में शुमार करेगा कि ये वो हैं कि जिन्होंने दुनिया में हमारे हुक्म की पाबंदी नहीं की और उन का अंजाम उन औरतों के साथ होगा मगरिब के सहाराओं में मौजूद क्लबों में होती हैं, जहाँ कोई लिबास नहीं पहनता, उन के साथ उन का हश्र होगा इस बुनियाद पर कि कपड़े न खुले थे न पूरे थे बल्कि अधूरे और टाईट थे। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि हम उस को कपड़ा शुमार नहीं करेंगे, हमारे नज़दीक वो औरत नंगी है, अगर वह चाहती है कि कल उस को वक़ार मिले तो फिर उस को अपने कपड़े खुले रखने चाहिए और पूरे

बदन को ढांपने वाले कपड़े मौजूद होने चाहिए।

3. तीसरा मानी मुहद्दीसीन कहते हैं कि " **كَاسِيَّة** " का मानी कपड़ा पहनने वाली और " **عَارِيَّة** " का मानी नंगा होना है। दूसरी हदीस में है कि कुछ औरतें कासिया-आरिया हैं, आखिरत से पहले ही वो औरतें कपड़े पहन के भी नंगी हैं। मतलब क्या है ?..... नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि वो इतने बारीक कपड़े पहनती हैं कि जिस से बदन का रंग नज़र आता है।

अब कौनसा घर बचा होगा ? कहाँ पाबंदी हो रही होगी ? मेरे नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस जुमले पे कौन पेहरा दे रहा होगा ? कहाँ इस बात का एहतिमांम किया जा रहा होगा ? मेरे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि जिस ने पतला कपड़ा पहना कि जिस से बदन का रंग नज़र आ रहा हो, मैं उस को कपड़े वाली नहीं कहता, मैं उस को नंगी कहता हूँ। सरकार फरमाते हैं कि वह नंगी है, उस ने कपड़े नहीं पहने। पतला कपड़ा खातून का लिबास नहीं है। पतला कपड़ा शरीअत में कपड़ा शुमार नहीं होता है। कपड़े खरीदते वक़्त दुख़्तराने इस्लाम को सोचना चाहिए कि जिस रब ने हमें नमाज़ का हुक्म दिया है, उसी रब ने कपड़े का भी हुक्म दिया है, और नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जैसे नमाज़ की रकअतें बयान फरमाई हैं, ऐसे ही कपड़े की किस्में भी बयान फरमाई हैं और मेरे मेहबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्यार का तकाज़ा ये है कि आज इस्लाम की बेटी वह कपड़े पहने जो शरीअत चाहती है यानी जिस से बदन की नुमाईश न हो और न ही बदन की शिनाख़्त हो सके और न ही पतला कपड़ा हो। सही कपड़ा पहन कर ये साबित करे कि मैं शरीअते मुतहहरा की पाबंद हूँ और पूरे पर्दे के साथ जिस वक़्त वह एहतिमांम करने वाली है तो नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस के लिए सत्तर (70) सिद्दीकों से बड़े सवाब का ऐलान फरमाया है।

इस सोसायटी में मैं आप के साथ हूँ। यानी कोई इस बुनियाद पर आप से नहीं बात कर रहा कि मेरा अमल तुम से कहीं आगे है और अच्छाई में कहीं मैं तुम से आगे हूँ, नहीं! नहीं! मैं भी आप ही की तरह इन हदीसों का इल्म तलब करने वाला हूँ, मुझ से मुआखिज़ा होगा और मेरी कौशिश है कि मुकम्मल तौर पर इस पर अमल होना चाहिए और ये ही दर्द बाँटना हमारा मंशूर है कि उम्मत जिस वक़्त भूलती जा रही है, हक़ के रास्ते से बिखरते जा रही है और बिल-खुसूस वह जो पाक मुक़ामात हैं, जहाँ से नसलें आबाद होती हैं।

### **औलाद का पहला सबक**

हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा की बायोग्राफी को बयान किया जाए तो आज की दुख़्तराने इस्लाम हैरान रह जाएंगी। हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा का निकाह "मालिक" के साथ हुआ था जो कि एक मुश्रिक था। जब हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने कलिमा ए इस्लाम पढ़ा तो "मालिक" सफर पर था। हज़रते अनस रदियल्लाहु अन्हु की विलादत हो चुकी थी। "मालिक" जब वापस आया तो उसे पता चला कि मेरी बीवी ने कलिमा ए इस्लाम पढ़ लिया है, "मालिक" ने अपनी बीवी से कहा कि "क्या तू दीन छोड़ गई है ?"

उस वक़्त ये लपज़ बोला जाता था कि तुमने दीन छोड़ दिया है, तुम साब्या बन गई

हो यानी पुराना बाप-दादाओं वाला दीन छोड़ दिया। तो हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा के कहा कि मैं साब्या नहीं बनी बल्कि **“मैं तो ईमान लाई हूँ”**।

हज़रते अनस रदियल्लाहु अन्हु जिस वक़्त बड़े हुए और बोलना शुरू किया तो सबसे पहले हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने अपने बेटे को कलिमा पढ़ाया **“ ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह”**, जब हज़रते अनस रदियल्लाहु अन्हु बोलने लगे तो हज़रते अनस रदियल्लाहु अन्हु को तलकीन करती हैं कि कहो **“ मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माअबूद नहीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के आखिरी रसूल हैं”**—

अब तसक्कुर करो कि घराना मुश्रिक का, घर वाली कलिमा ए इस्लाम पढ़ गई है और बेटा दोनों का है, मगर हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मेरे बेटे कहो **“ ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ”**— हज़रते अनस रदियल्लाहु अन्हु के वा. लिद मुश्रिक थे, उस ने आखिर तंग आकर हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा से कहा कि **“ खुद खराब हो गई हो तो मेरा बेटा खराब मत करो, मेरे बेटे का सत्यानास करना चाहती हो, बुतों का मज़हब छोड़ कर उसे नए दीन में दाखिल करना चाहती हो, खुद तो कलिमा पढ़ गई हो लेकिन इस से ऐसी बातें मत करो, उस से वज़ीफा करव. ाना चाहती हो कि अनस कह “ ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ”**— “मालिक” ने जिस वक़्त झगड़ा किया तो हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने कहा कि जिसे तू फसाद समझता है ये फसाद नहीं है, ये तो वह दीन है जो पूरी दुनिया पे छाने वाला है। फिर “मालिक” हालते शिर्क में ही मर गया।

### **अजीब हक़ मेहर:**

अब इस के बाद हज़रते अबू तलहा अंसारी रदियल्लाहु अन्हु ने निकाह का पैग़ाम भेजा, वह भी अभी मोमिन नहीं हुए थे। हज़रते अबू तलहा अंसारी मदीना शरीफ में बहुत बड़े जमीनदार थे। मस्जिदे नबवी शरीफ के साथ जो पहला बाग़ था वह हज़रते अबू तलहा अंसारी रदियल्लाहु अन्हु का था। हज़रते अबू तलहा अंसारी ने निकाह का पैग़ाम भेज दिया और वह अभी हालते कुफ़्र में थे तो हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा ने कहा कि मेरी एक शर्त है और मेरा वही हक़ मेहर है, उस के सिवा न कुछ माँगूंगी और न और हक़ मेहर है। तो हज़रते अबू तलहा अंसारी रदियल्लाहु अन्हु ने कहा कि तुम क्या हक़ मेहर चाहती हो ? कितने बागात, कितना सोना चाहिए ? तो हज़रते उम्मे सुलैम रदियल्लाहु अन्हा कहने लगीं कि **“ ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ”** मेरा हक़ मेहर है, तुम कलिमा ए इस्लाम पढ़ जाओ तो मैं तुम से शादी कर लूंगी।

यानी ये मेयार (साँचे) थे उन ख़्वातीन के और ये अंदाज़ था और इस अंदाज़ में वो आगे बढ़ी हैं तो अल्लाह तआला ने कदम कदम पे उनको अज़मतें अता फरमाई हैं। हज़रते अबू तलहा अंसारी रदियल्लाहु अन्हु ने जब ये जुमला सुना तो एक मिनट भी नहीं लगने दिया कहने लगे **“ जो तेरा रब है वही मेरा रब है, जो तेरे नबी हैं वही मेरे नबी हैं”** । मैं कहता हूँ **“अशहदु अल्लाइलाहा इल्लल्लाहु व अशहदु अन्ना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह”**

→(हवाला: तबकाते कुबरा, जिल्द 8)

## बीन की मुमानअत (मनाही)

ये मुख्यसर सा इन्द्रोडक्शन था। इस्लाम की अपनी बेटियों से गुप्तगू हालते मार्ग में हो या हालते खुशी में, जैसे भी हालात हों, उस में इस्लाम के ख़ास निसाब हैं। अगर उस पर दुख़ारे इस्लाम कायम नहीं रहती तो उसके लिए सख़्त वर्इद है।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि

وَقَالَ " النَّائِحَةُ إِذَا لَمْ تَتُبْ قَبْلَ مَوْتِهَا تُقَامُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَعَلَيْهَا سِرْبَالٌ مِنْ قَطْرَانٍ وَدِرْعٌ مِنْ جَرَبٍ " .

“ जो औरत बीन करती हो और मरने से पहले तौबा न करे, उस को तारकोल का लिबास पहनाया जाएगा और ख़ारिश की ज़िरह पहना दी जाएगी, उस ने वक्ते मार्ग शरीअते मोतहहरा का ख़याल क्यों नहीं रखा”

(सहीह मुस्लिम शरीफ)

## शादी की तक़रीबात और दुख़तराने इस्लाम

शादी की तक़रीब में किसी ख़ातून का पर्दे में जाकर शरीअते मोतहहरा के मुताबिक़ वापस आना, इतना बड़ा अमल है कि जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा कि कुछ औरतें और बच्चे शादी में शिक़त कर के वापस आ रहे हैं तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जल्दी से खड़े हो गए कि ये औरतें और बच्चे शादी से शिक़त कर के वापस आ रहे हैं तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि “ पूरी रूए ज़मीन पर इस वक्ते जितना मुझे तुम से प्यार है इतना मुझे और किसी से प्यार नहीं है

(सहीह बुख़ारी शरीफ)

आख़िर वह कितना बड़ा अमल है कि जिस पर नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये लफज़ बिल दिये हैं कि तुम मेरे नज़दीक पसंदीदा—तरीन लोगों में से हो कि तुम शादी में शिक़त कर के वापस आ रहों हो और तुम्हारे बच्चे भी वहाँ शिक़त कर के वापस आ रहे हैं। अगर वहाँ भंगड़े हों, डाँस हो, खुराफ़ात हो और वहाँ बेहयाई हो, वहाँ म्यूज़िक हो और इस तरह के तमाशे हों तो ये सारे जहन्नम के काम हैं—

नबी ए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि

“ पूरी रूए ज़मीन पर इस वक्ते जितना मुझे तुम से प्यार है इतना मुझे और किसी से प्यार नहीं है ”

यानी आप ने वाज़ेह कर दिया कि एक इस्लाम की बेटि को शादी में जाते वक्ते सोचना चाहिए कि वह सवाब कमाने जा रही है, गुनाह लेने नहीं जा रही है। फिर उस को पता चलेगा कि मुझे शादी के फंक्शन में कैसे शिक़त करना है और शादी के मराहिल को किस अंदाज़ में तैय करना है ?

मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला नबी ए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अज़ीम मरतबा के तुफ़ैल

शरीअते मोतहहरा पे अमल की तौफीक़ अता फरमाए।

आमीन